© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

अस्पृश्यता – सरदार पटेल के मानवतावादी दृष्टिकोण

जितेन्द्र हरिजन
सहायक प्राध्यापक
राजनीतिशास्त्र विभाग
पी0के0 राय स्मारक महाविद्यालय
धनबाद (झारखण्ड)

सरदार पटेल गांधीजी के अनुचर थे। सरदार पटेल का संपूर्ण सामाजिक चिन्तन गांधीवाद का पूरक है। गांधीजी भारतीय सामाजिक और राजनीतिक मंच पर 1919–1948 तक इस प्रकार छाए रहे कि इस अवधि को ''गांधीयुग'' के नाम से जाना जाता है। इन्होने सत्य, अहिंसा तथा शांति मार्ग से ऐसे मानवतावादी दृष्टिकोण का निर्माण किया जिससे अस्पृश्यता, छुआ–छुत, जाति भेद व वर्ग–भेद जैसी बुराईयों का उन्मूलन हो सके। गांधीजी के अनुचर होने के कारण पटेल ने भी अस्पृश्यता को मानवता पर एक धब्बा माना। प्रस्तुत शोध में अस्पृश्यता और जाति–भेद पर पटेल के मानवतावादी दृष्टिकोण को उद्घाटित करने का सुक्ष्म प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द– अस्पृश्यता, वर्ण व्यवस्था, सामाजिक समानता

परिचय–

स्वतंत्रता पूर्व भारत में जातीय भेदभाव एवं छुआछुत राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बहुत बड़ा अवरोधक था। सामाजिक विभाजनों के रहते स्वतंत्रता संग्राम के लक्ष्यों को हासिल करना मुश्किल था। छुआछुत और अस्पृश्यता से पीड़ित लोगों के लिए सामाजिक समानता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ–साथ अछूतों के अधिकारों के लिए भारतीय समाज के अंदर डॉ0 भीम राव अम्बेदकर जैसे विभूतियों के नेतृत्व में एक और आंदोलन चल रहा था। ऐसी स्थिति में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व अस्पृश्यता जैसे सामाजिक कलंक की अनदेखी करने की सोच भी नहीं सकता था। गांधी से प्रवाहित सरदार पटेल ने भी अस्पृश्यता को हिन्दु समाज का एक कलंक बताया तथा अछूतों के कल्याण के लिए तथा उनके स्वाभिमान के लिए प्रयासरत रहे। सरदार पटेल के चिंतन में जातिय भेदभाव, अछूतों की दशा तथा सामाजिक समानता इत्यादि की झलक मिलती है। प्रस्तुत आलेख अस्पृश्यता पर पटेल के विचारों को उद्घाटित करता है।

उद्देश्य:-

प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी एवं आने वाली पीढ़ियों को अस्पृश्यता और छुआछुत पर पटेल के विचारों से अवगत कराना है ताकि हिन्दु समाज के इस विभाजनकारी कलंक को समूल नष्ट करने के वर्तमान समाज के

प्रयासों को प्रबलता प्राप्त हो सके। इसका उद्देश्य पटेल के मानवतावादी और प्रगतिशील विचारधारा को प्रकाश में लाना है।

विधि :–

प्रस्तुत आलेख के लिए ऐतिहासिक एवं निगमनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें द्वितीयक डाटा का प्रयोग किया गया है।

गांधीजी की तरह पटेल की मान्यता थी कि छुआछुत हिन्दु समाज के उपर न सिर्फ एक कलंक है, बल्कि यह राष्ट्रीय प्रगति एवं राष्ट्रीय एकता के मार्ग में भी बहुत बड़ी बाधा है। पटेल के अनुसार, अस्पृश्यता एक मानसिक रोग है। यह ऐसी कुंठित मानसिकता है जो व्यक्ति को व्यक्ति से घृणा करना सिखाती है। इसका निवारण कानून या दण्ड से कदापि संभव नहीं है। इसका उन्मूलन तो प्रेम और सौहार्द से ही किया जा सकता है।

पटेल के अनुसार– ''अस्पृश्यता धर्म के बहाने चलनेवाला एक ठोंग हैं। उन्होने 1936 में संयुक्त प्रान्त के किसान के सम्मेलन में छुआछुत की मर्त्सना करते हुए कहा था– ''यह एक पाप है। जिसे हम अछुत मानते हैं, अगर अछुत हमारा समाज छोड़कर दूसरा धर्म अपना ले, उसी वक्त उसे छुआ जा सकता है। हिन्दू धर्म के इस कलंक को मिटाने के लिए गांधीजी ने अनेक दुःख सहे है।''

अस्पृश्यता को धार्मिक और मानवता के आधार पर पटेल ने अनुचित बताया। उन्होने कहा कि ''प्राणी के शरीर से जब प्राण निकल जाता है तब वह अस्पृश्य बन जाता है। जब तक मनुष्य या प्राणी मात्र में प्राण होता है, तब तक कोई भी प्राणी को अछुत नहीं होता। यह प्राण प्रभु का अंश है और किसी भी प्राणी को अछुत कहना भगवान का तिरस्कार करने के समान है। जिसने ईश्वर को पहचान को लिया, उसके लिए कुत्ते को छुकर नहाना नहीं पड़ता फिर जो हमारे जैसे मनुष्य है, उन्हें छुकर कोई कैसे अपत्रित हो जाता है? उन्होने कहा– ''जागो हिन्दुओं। आप भूल कर रहे है। अंतत्यज इसाई या मुसलमान बन जाते हैं तो आप उन्हें सलाम करते है। हिन्दू धर्म त्यागकर वह हमारे साथ बैठने के लायक बन जाता है। पटेलों के अनुसार अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का वहम है। हमें जाति के आधार पर मनुष्य से भेदभाव नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह भी प्रभु का ही एक अंश है।

पटेल वर्ण व्यवस्था आधारित जाति व्यवस्था के विरोधी थे। उनके अनुसार, व्यक्ति अपने कर्म से ऊँचा या अधम होता है। यदि उसका कर्म ऊँचा है तो यह आदर और प्रतिष्ठा का हकदार है। ऊँची जाति में जन्म लेकर भी यदि व्यक्ति के कर्म बुरे या गंद है, तो वह तिरस्कार के योग्य है। मान–प्रतिष्ठा जन्म के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता और कर्म के आधार पर मिलता है। इस प्रकार पटेल की मान्यता थी कि व्यक्ति का व्यक्ति के साथ व्यवहार उसके जन्म, जाति और वंश के आधार पर नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार, व्यक्तियों के अच्छे कर्म से उनका जीवन अच्छा

होता है और अच्छे जीवन से सामाजिक जीवन ऊँचा होता है। सामर्थ्यवान, शक्तिशाली एवं सम्पन्न वर्ग को चाहिए कि वह कमजोर एवं निम्नवर्ग की प्रगति के लिए उसकी सहायता करें।

गांधीजी की तरह पटेल भी अछुतोद्दार के लिए प्रयत्नशील रहे। अछुत वर्ग के लोगों को समान सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त कराने के लिए वे लगातार काम करते रहे। उन्होने संवर्ग हिन्दुओं को हरिजन बच्चे गोद लेने की सलाह दी थी। यह वर्ग हिन्दु समाज द्वारा उपेक्षित रहने के कारण सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में पिछड़ा हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इस वर्ग के लोगो को कानूनी और संवैधानिक संरक्षण प्रदान करने के हिमायती रहे। पटेल ने प्रतिनिधियात्मक संस्थाओं में इस वर्ग के लोगों के आरक्षण के पक्षघर थे। सार्वजनिक स्थलो एवं मंदिरों में इनके प्रवेश की स्वतंत्रता, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश, इनकी छात्रवृति, शिक्षा शुल्क से मुक्ति आदि का समर्थन भी किया। संविधान सभा के सदस्य की हैसियत से पटेल ने इस वर्ग से संबंधित विशेष संवैधानिक उपबंधों को लागु कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। परन्तु पटेल धर्म के आधार पर आरक्षण के विरोधी रहे। उनकी अनुसार धर्म परिवर्तित दलितों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए। उनकी मान्यता थी कि धर्म के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था करने से धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होगा ''तथा साथ ही साथ लोग लालच में धर्म परिवर्तन करेंगें जो राष्ट्र के शांतिपूर्ण विकास में अवरोधक होगा।

निष्कर्ष :– अस्पृश्यता संबंधी पटेल के चिन्तन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे सामाजिक जीवन में समानता को महत्व देते थे। वे किसी प्रकार के भेदभाव यथा जात–पात, ऊँच–नीच के विरोधी थी। वे इसे मानवता पर कलंक मानते थे। उनके अनुसार, समरसतापूर्ण सामाजिक व्यवस्था का निर्माण दी राष्ट्रीय हितों की रक्षा करेगा। गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति के लिए तथा राष्ट्र की प्रगति के लिए मानवीय आधार पर वे अस्पृश्यता का अन्त चाहते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी वे एक ऐसे स्वच्छ समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ व्यक्ति और व्यक्ति के बीच जाति और वर्ण के आधार पर भेदभाव नहीं हो। उन्होने एकबार कहा था– ''मैं जाति विरादरी को भुल चुका हूँ। सारा हिन्दुस्तान मेरा गांव है। सभी जातियों के लोग मेरे भाई–बहन है।

संदर्भ सूची

1. गुप्त मोहनी एवं गुप्त, विश्व प्रकाश– सरदार वल्लभ भाई पटेल, राधा पब्लिकेशन– नई दिल्ली।
2- Jayasbee S. The Iron Man of India, R.P. Bookwala & Company, New Delhi
3. पारीख, नरहरि द्वारिका– सरदार पटेल के भाषण – सरदार वल्लभ भाई, दोनों खण्ड, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।